

हाथी और चतुर खरगोश

एक वन में 'चतुर्दन्त' नाम का महाकाय हाथी रहता था। वह अपने हाथीदल का मुखिया था। बरसों तक सूखा पड़ने के कारण वहा के सब झील, तलैया, ताल सूख गये, और वृक्ष मुरझा गए। सब हाथियों ने मिलकर अपने गजराज चतुर्दन्त को कहा कि हमारे बच्चे भूख-प्यास से मर गए, जो शेष हैं मरने वाले हैं। इसलिये जल्दी ही किसी बड़े तालाब की खोज की जाय।

बहुत देर सोचने के बाद चतुर्दन्त ने कहा-"मुझे एक तालाब याद आया है। वह पातालगडगा के जल से सदा भरा रहता है। चलो, वहीं चलें।" पाँच रात की लम्बी यात्रा के बाद सब हाथी वहाँ पहुँचे। तालाब में पानी था। दिन भर पानी में खेलने के बाद हाथियों का दल शाम को बाहर निकला। तालाब के चारों ओर खरगोशों के अनगिनत बिल थे। उन बिलों से जमीन पोली हो गई थी। हाथियों के पैरों से वे सब बिल टूट-फूट गए। बहुत से खरगोश भी हाथियों के पैरों से कुचले गये। किसी की गर्दन टूट गई, किसी का पैर टूट गया। बहुत से मर भी गये।

हाथियों के वापस चले जाने के बाद उन बिलों में रहने वाले क्षत-विक्षत, लहू-लुहान खरगोशों ने मिल कर एक बैठक की। उस में स्वर्गवासी खरगोशों की स्मृति में दुःख प्रगट किया गया तथा भविष्य के संकट का उपाय सोचा गया। उन्होंने सोचा, आस-पास अन्यत्र कहीं जल न होने के कारण ये हाथी अब हर रोज इसी तालाब में आया करेंगे और उनके बिलों को अपने पैरों से रौंदा करेंगे। इस प्रकार दो चार दिनों में ही सब खरगोशों का वंशनाश हो जायगा। हाथी का स्पर्श ही इतना भयङ्कर है जितना साँप का सूँघना, राजा का हँसना और मानिनी का मान।

इस संकट से बचाने का उपाय सोचते-सोचते एक ने सुझाव रखा-"हमें अब इस स्थान को छोड़ कर अन्य देश में चले जाना चाहिए। यह परित्याग ही सर्वश्रेष्ठ नीति है। एक का परित्याग परिवार के लिये, परिवार का गाँव के लिये, गाँव का शहर के लिये और सम्पूर्ण पृथ्वी का परित्याग अपनी रक्षा के लिए करना पड़े तो

भी कर देना चाहिये।" किन्तु, दूसरे खरगोशों ने कहा-"हम तो अपने पिता-पितामह की भूमि को न छोड़ेंगे।"

कुछ ने उपाय सुझाया कि खरगोशों की ओर से एक चतुर दूत हाथियों के दलपति के पास भेजा जाए। वह उससे यह कहे कि चन्द्रमा में जो खरगोश बैठा है उसने हाथियों को इस तालाब में आने से मना किया है। संभव है चन्द्रमास्थित खरगोश की बात को वह मान जाय।"

बहुत विचार के बाद लम्बकर्ण नाम के खरगोश को दूत बना कर हाथियों के पास भेजा गया। लम्बकर्ण भी तालाब के रास्ते में एक ऊँचे टीले पर बैठ गया; और जब हाथियों का झुण्ड वहाँ आया तो वह बोला-"यह तालाब चाँद का अपना तालाब है। यहा मत आया करो।"

गजराज-"तू कौन है?"

लम्बकर्ण-"मैं चाँद में रहने वाला खरगोश हूँ। भगवान् चन्द्र ने मुझे तुम्हारे पास यह कहने के लिये भेजा है कि इस तालाब में तुम मत आया करो।"

गजराज ने कहा-"जिस भगवान् चन्द्र का तुम सन्देश लाए हो वह इस समय कहाँ है?"

लम्बकर्ण-"इस समय वह तालाब में है। कल तुम ने खरगोशों के बिलों का नाश कर दिया था। आज वे खरगोशों की विनति सुनकर यहाँ आये हैं। उन्हीं ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है।"

गजराज-"ऐसा ही है तो मुझे उनके दर्शन करा दो। मैं उन्हें प्रणाम करके वापस चला जाऊँगा।"

लम्बकर्ण अकेले गजराज को लेकर तालाब के किनारे पर ले गया। तालाब में चाँद की छाया पड़ रही थी। गजराज ने उसे ही चाँद समझ कर प्रणाम किया और लौट पड़ा। उस दिन के बाद कभी हाथियों का दल तालाब के किनारे नहीं आया।

काषी और पट्टा परगैम

एक वन में 'पट्टा' नाम का भूत काय काषी रहता था। वह अपने काषीदल का भीषण था। वन में उस भाषा पढ़ने के कारण वन के भूत गिल, उलैया, उल भाषा गये, और वृद्ध भूत गये। भूत काषी ने मिल कर अपने गणगण पट्टा के कहे कि कभी गये हुए हुए-पुत्र में भर गए, से मेध के भरने वाले के। अलिये एली की किभी गये उलाह की पिए की रथा।

गुरु देव भेदने के बाद पट्टा ने कहा- "भूत एक उलाह था मुया है। वह पाठालगण के एल में भाषा हरा रहता है। गले, वही गले।" पट्टा गुरु की लभी था के बाद भूत काषी वही पढ़े। उलाह में पानी था। दिन हर पानी में पिलने के बाद काषी का दल मांभ के गुरु निकला। उलाह के गारे और परगैम के मनगिनत मिल थे। उन गिलें में एभीन पेली के गरे थी। काषी के पारे में वे भूत गिल हुए-हूए गए। गुरु में परगैम ही काषी के पारे में कुल गये किभी की गुरु हुए गरे, किभी का पार हुए गया। गुरु में भर ही गये।

काषी के रूप में गले एवं के बाद उन गिलें में रहने वाले बड़-बिड़, लड़-लूकान परगैम ने मिल कर एक गैंक की। उम में भूतवाभी परगैम की भूत में दुःप पुण किय गया उषा हविष के मंकर का उपाय भेदा गया। उने भेदा-मुम-पाम मनु कली एल न केने के कारण वे काषी मग कर रेण अभी उलाह में मुया करेगे और उनके गिलें के अपने पारे में रहे करेगे। उम प्रकार के गार दिने में ही भूत परगैम का संभन के रथगा। काषी का भूत ही उतना हवए कर है एतना भीष का भूत, गार का केभन और भानिनी का भान।

उम मंकर में गारे का उपाय भेदने-भेदने एक ने भूतवा रापा-"रुमें मग उम भूत के केर कर मनु देम में गले रन गारिग। वर परिगुग की भवम्पु नीति है। एक का परिगुग परिवार के लिये, परिवार का गैव के लिये, गैव का मरु के लिये और मरु पत्री का परिगुग अपनी रवा के लिए करना पड़े है ही कर देना गारिगे। किनु, एभरे परगैम ने कहा- "रुभे अपने पिता-पिताभर की सुभि के न केरेगे।"

गुरु ने उपाय भूतवा कि परगैम की और में एक पट्टा पट्टा काषी के दलपति के पाम हुए रथा। वह उममें वर कहे कि पट्टा में से परगैम गैंक है उमने काषी के उम उलाह में मुने में भन किय है। मंरुव है पट्टाभित परगैम की गुरु के वर भान रथा।

गुरु विचार के बाद लभुकल नाम के परगैम के पट्टा मना कर काषी के पाम हुए गया। लभुकल ही उलाह के गमु में एक उं गैले पर गैंक गया; और एम काषी का उं वर मुया है वर गैला-"वर उलाह गैंक का मपन उलाह है। वर भउ मुया करे।" गणगण-"तु कौन है?"

लभुकल-"मैं गैंक में रहने वाला परगैम है। उगवना पट्टा भूत उभरे पाम वर करे।"

के लिये हुए है कि हम अलाह में उभर भउ मुवा करे।"

गणराण ने कहा- "एक रुगवाना एनु का उभर भउम लाए के वरु हम मभय करी है?"

लभुकल- "हम मभय वरु अलाह में है। कल उभर ने एरगेमें के गिले का नाम कर दिया था।

मुए वे एरगेमें की वितति भुनकर वरी मुबे है। उनी ने भुए उभररे पाम हुए है।"

गणराण- "एभा की है उ भुए उनके एसन कर है। मैं उने प्रभ करके वपम एला एउगा।"

लभुकल मुकेले गणराण के लेकर अलाह के किनारे पर ले गया। अलाह में एा की

काया पर रली थी। गणराण ने उमे की एा मभा कर प्रभ किया एर लोए पठा। उम

एिन के एा करी एा विये का एल अलाह के किनारे वरी मुवा।

मनुवाए - प्रगवा वरु